नवभारत टाइम्स
शनिवार, 23 अगस्त 2025

ये कैसे गुस्सैल स्टूडेंट्स और घबराए हुए टीचर्स

स्कूली बच्चों का व्यवहार बहुत तेजी से बदल रहा है। जी हां, जितना आप और हम सोच सकते हैं, टीचर्स के प्रति उनका व्यवहार उससे भी ज्यादा खराब हो रहा है। हालात यह हैं कि वे अपने टीचर्स तक को बुली कर रहे हैं। क्या है इसकी वजह और क्या हो समाधान, हमने इस पर एक्सपर्ट्स से बात की :

Shubham.Tripathi@timesofindia.com

देहरादून में नौवीं क्लास के छात्र ने अपने शिक्षक को गोली मार दी, क्योंकि शिक्षक ने उसे होमवर्क ना करने पर डांटा था। अहमदाबाद में भी कुछ दिन पहले हुई लड़ाई के चलते नौवीं क्लास के छात्र ने दसवीं क्लास के लड़के की चाकू मारकर हत्या कर दी। स्कूल से जुड़ी ये दोनों खबरें छात्रों में बढ़ते हिंसक स्वाभाव की ओर इशारा कर रही हैं, साथ ही इन्होंने बच्चों के बदलते व्यवहार पर भी बहस छेड़ दी है। शिक्षकों का कहना है कि तमाम स्कूली बच्चे अब नियंत्रण से बाहर जा रहे हैं और ऐसा व्यवहार करते हैं, जो सीधे-सीधे दुर्व्यवहार या सीधी भाषा में कहें तो बदतमीजी की श्रेणी में आता है। यही बच्चे आगे चलकर अपराध की दुनिया में कदम रख सकते हैं।

टीचर की बॉडी शेमिंग और बुलिंग आम बात

पहले शरारत के नाम पर टीचर के पीठ पीछे उसकी ऐक्टिंग करना या उसका नाम बिगाड़ना होता था। मगर अब बच्चे बॉडी शेमिंग, बुलिंग (यानी किसी को डराना-धमकाना और नीचा दिखाना) और दुर्व्यवहार तक करने लगे है। वीएसपीके इंटरनैशनल स्कूल की प्रिंसिपल डॉ. संचिता गुप्ता बताती है कि आजकल बच्चे अपनी फेक आइडी बनाकर ऑनलाइन स्कूल और टीचर के बारे में उल्टा-सीधा लिखने लगे है। वे स्कूल के ऑनलाइन पेज (मसलन फेसबुक पेज, इंस्टा पेज) पर ट्रुथ एंड डेयर खेलते है। अगर किसी टीचर ने अनुशासन में रहने के लिए कह दिया, तो ऑनलाइन उसकी बुराई और बॉडी शेमिंग करने लगते है। यहां तक कि टीचर के बारे में मनगढ़ंत स्टोरी बनाकर डाल देते है। वे ऐसी-ऐसी बातें लिखते है कि शिकायत करें, तो वह साइबर क्राइम की श्रेणी में आएंगी। कोई टीचर सख्त है, तो कई बच्चे मिलकर एप्लिकेशन तक लिख देते है कि इस टीचर को हटाओ। अब ये सब समस्याएं छठी-सातवी क्लास के बच्चों में भी दिख रही है।' जबकि एम. एम. पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल रूमा पाठक बताती है कि बच्चों का रवैया ऐसा है कि स्कूल क्या कर लेगा? टीचर क्या कर लेंगे? बच्चों में अब झूठ बोलने की आदत भी हद से ज्यादा बढ़ गई है। और तो और वे ऑनलाइन और ऑफलाइन सिर्फ टीचर को नहीं, बल्कि साथ के लड़के-लड़कियों को भी बुलिंग करते है। अभी पीछे एक स्कूल में एक स्टूडेंट भांग की टॉफियां लाया और अपने साथियों को खिला दी। बाद में सीसीटीवी देखने पर पता लगा।'

इन घटनाओं की वजह है कई

ऐसे में सवाल उठता है कि बड़े और महंगे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी क्यों इस तरह का दुर्व्यवहार कर रहे है? इसके जवाब में क्लिनिकल साइकॉलजिस्ट और पैरेंटिंग एक्सपर्ट गीतांजलि शर्मा कहती है, 'एक तो बच्चों को लगता है कि उन्हें कोई समझ नहीं पाएगा, इसलिए उन्होंने अपनी एक दुनिया क्रिएट कर ली है जिसके बारे में पैरेंट्स नही जानते। आज हर दो साल में युवाओं की आपसी बातचीत की कोड लैंग्वेज चेंज हो रही है। नौवीं क्लास का स्टूडेंट आज सातवी क्लास की कोड लैंग्वेज नहीं समझ पाता। फिर आजकल पैरेंट्स ना तो दूसरों की भावनाओं और हालातों को समझना सिखाते है और ना ही नैतिक मूल्य।' शिक्षकों का कहना है कि इसकी एक बड़ी वजह पैरेंट्स का सपोर्ट भी है। रूमा पाठक कहती है कि अगर बच्चों को बाल कटवाने तक को कह दो तो पैरेंट्स टीचर की शिकायत करने पहुंच जाते है। ऐसे में बच्चों में टीचर्स का डर तो खत्म ही हो गया है।